**प्रदेश के सम्मानित शिक्षक/शिक्षाविदों**

विश्व में हर बालक–बालिका असीम क्षमताओं और संभावनाओं के साथ जन्म लेता है और सीखन का कौशल उसमें प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से विद्यमान होता है। सीखने में अगर कोई बाधाएँ है तो उसके कारण अक्सर बच्चों में न होकर सीखने–सिखाने की विधियों या तकनीकों में होती हैं। ऐसा इसलिए भी होता है क्योंकि हर बच्चे के सीखने का अपना एक तरिका होता है, एक गति होती है। शिक्षा शास्त्रियों की दृष्टि में एक बेहतर स्कूल वह है जहाँ छात्रों की असफलता उनकी पृष्ठभूमि या बाहर के कारणों पर नही होती है । छात्रों की असफलता या सफलता का दायित्व शिक्षक को स्वयं स्वीकार करना होगा, स्वयं के प्रयास के बावजूद भी छात्रों के न सीख पाने की स्थिति में शिक्षण पद्धतियों व प्रयासों को असफल मानना होगा न कि छात्रों को। आज जहां शिक्षा का वैश्विकरण हो रहा है हमें अपने प्रदेश की शिक्षा,भाषा,विज्ञान,पर्यावरण एवं गणित सीखने–सिखाने की पद्धतियों को विकसित करना होगा ताकि अवधारणात्मक समझ पर अधिक जोर दिया जा सके।

**सचना संचार तकनोक (आई.सी.टी)** से प्रशिक्षण एवं अध्यापन कार्य, विषयों के प्रति समझ एवं रुचि का विकास एवं बच्चों के सीखने के तरीकों मे असाधारण प्रगति होती है। हम मात्र अपनी सोच एवं वास्तविकता की समझ को केन्द्र में रखना है। हमें अपने प्रदेश को एक शिक्षा का प्रतिमान स्थापित करने के लिए सचना संचार तकनोक **(आई.सी.टी)** को अविलम्ब लागू करना होगा ताकि हर बालक–बालिका अपनी क्षमताओं को दक्षताओं में परिणित कर सकें। साभार।

**रमेश प्रसाद बडोनी**

**राष्टोय आई.सी.टी पुरस्कार–2012**